सँजोने हेतु आशीर्वाद

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

"मन्दिर में रहो" सत्संग
शनिवार, १ अगस्त, २०२०

ऐसा लगता है मानो, एक समय था जब,
इस जगत में विश्व-शान्ति का सर्वप्रमुख स्थान था
और मानवता उत्कृष्टता के शिखर को छूती प्रतीत होती थी
क्योंकि, बहुत-से लोग
शान्ति के इस अद्‌भुत तत्त्व की ओर ध्यान देने लगे थे
और नैराश्य से भरे संसार में
सामंजस्य और प्रशान्तता लाने के लिए
उन्होंने सजगता के साथ प्रयत्न किया था।

शान्ति में,
सभी प्राणियों ने
संरक्षण के
असाधारण अनुभव को पाया।

लेकिन इस समय,
एक और ख़तरा
हमारे सिरों पर मँडरा रहा है,
हमारे रक्त-प्रवाह में रिस रहा है,
उनके जीवन का हरण कर रहा है
जिन्हें जीने का, फलने-फूलने का पूरा अधिकार है।

संरक्षण शब्द अनमोल है।
जो लोग दिन-रात
इस ख़तरनाक वायरस को निर्वासित करने के लिए
और इस संसार में शिष्टाचार लाने के लिए
कार्यरत हैं,
सुरक्षित होने की गहन भावना
उन्हें जो दे सकती है
वह अपरिमेय है।

पृथ्वी ग्रह पर इस महामारी का प्रकोप होने के पहले से ही
सभी के जीवन में,
अनेक समस्याएँ थीं,
मसलों की तो कोई कमी थी ही नहीं।
हर कोई जो जीने के लिए संघर्ष कर रहा था
उसकी अपनी अनकही कहानी थी।

पहले से कहीं ज़्यादा अब यह स्पष्ट है
कि हर कोई कितना अलग है,
हर कोई कितना हताश है,
कैसे अलग-अलग समझ की आड़ी-तिरछी रेखाओं ने
इंसानों के बीच तबाही मचा रखी है।

सदियों से, अनेक लोगों ने—
अपनी आस्थाओं, अपनी निष्ठा और प्रार्थनाओं द्वारा,
अपनी धारणाओं और धर्म-विद्या द्वारा,
अपनी नास्तिकता या समीक्षात्मक विचारशैली द्वारा—

उत्तरदायित्व, सम्मान और समग्रता के साथ
जीने का तरीक़ा ढूँढ़ लिया।
इस संसार में
जीवन और मृत्यु की,
अनिश्चितता की,
भारी संकट की इस घड़ी में
हम किस तरह का संरक्षण ढूँढ़ रहे हैं और दे रहे हैं?

बड़ा सोचो। छोटे-छोटे क़दम लो।

जी-जान से प्रार्थना करो। सद्गुणी बनने का उद्यम करो।

भयभीत न हो। पोषक प्रकाश को पहचानो।

देने के लिए दो। अपनी सदयता को फैल जाने दो।

खीजो मत। जितनी गहराई से श्वास ले सकते हो, लो।

सामने आओ।
सौजन्यता और नम्रता से पेश आओ।

अपनी नकारात्मकता को त्यागो।
सुन्दर और कल्याणकारी विचार रखो
और उन्हें प्रत्यक्ष रूप दो।

विशिष्ट रीति से प्रेम करो।
कोई भी इस बात पर सन्देह न कर सके
कि तुम एक सच्चे इंसान हो।

अपने हर्ष को अभिव्यक्त करो।
सबको यह पता चलने दो कि तुम पर विश्वास किया जा सकता है।

मधुर आशा को अपना माननीय पुरस्कार बना लो।

यह रोशन करने के लिए कि तुम सचमुच कौन हो,
इस समय को अपना समय जानो,
और इस संसार में सार्थक परिवर्तन लाओ।

एक फूल समय के साथ मुरझा सकता है।
तथापि, हमेशा याद रखो :
तुम हीरे के बने हो।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।